

चीन प्लस-वन का विकल्प बनता यूपी

कि सी राष्ट्र के आर्थिक इतिहास में कुछ ऐसे क्षण आते हैं जब एक अकेला निर्णय न केवल भूगोल को, बल्कि समूची नियति को बदल देता है। जेवर में नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्घाटन और व्यावसायिक उड़ानों का शुभारंभ निःसंदेह ऐसा ही एक क्षण है, लेकिन इसे केवल एक हवाई अड्डा कहना भूल होगी। भू-अर्थशास्त्र की दृष्टि से जेवर महज एक अवसरचरणा नहीं, एक घोषणापत्र है, जो भूगोल, आर्थिक शक्ति और भू-राजनीतिक रणनीति का संगम है। भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश, जो सदियों से अपनी भूबद्ध स्थिति की बेड़ियों में जकड़ा रहा, अब वैश्विक अर्थव्यवस्था के द्वार पर दस्तक दे रहा है। 24 करोड़ की आबादी वाला यह राज्य जनसंख्या के हिसाब से दुनिया की सबसे बड़ी उप-राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था है, लेकिन समुद्री व्यापार मार्गों तक उसकी सीधी पहुंच नहीं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जेवर हवाई अड्डा उद्घाटन के अवसर पर इसी सच्चाई को रेखांकित किया कि यह हवाई अड्डा उत्तर प्रदेश की भूबद्ध बाधाओं को तोड़कर राज्य के एमएसएमई, कृषि और भारी उद्योगों को सीधे वैश्विक बाजारों से जोड़ेगा। जेवर का निरीक्षण करते हुए मुख्यमंत्री ने जो कहा, वह भू-आर्थिक सोच का संक्षिप्त सार है कि यह सिर्फ एक हवाई अड्डा ही नहीं, बल्कि व्यापक आर्थिक विकास का प्रवेश द्वार है।

भू-अर्थशास्त्र के सिद्धांत यह स्थापित करते हैं कि किसी राष्ट्र की आर्थिक शक्ति का मार्ग उसकी भौगोलिक बनावट से होकर गुजरता है। अभी जेवर हवाई अड्डे की वार्षिक क्षमता 1.2 करोड़ यात्री और 2.5 लाख टन कार्गो की है, जो अंततः सात करोड़ यात्री और 10 लाख टन कार्गो तक विस्तृत होगी। यह हवाई अड्डा राज्य को दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं से जोड़कर उसकी भूबद्ध बाधाओं को पार करने में मदद करेगा। जेवर को साधारण हवाई अड्डे से अलग करने वाली बात उसकी एरोट्रोपोलिस परिकल्पना है। एअर इंडिया एसएटीएस द्वारा संचालित मल्टी-माडल कार्गो हब, वाईआईडीए सेक्टर-10 में 206 एकड़ का इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्यूफैक्चरिंग



डा. मनिष दामाडे

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब कहीं उड़ान पट्टी तैयार होती है, तो प्रगति के स्वप्न भी तेजी से उड़ान भरते हैं



विकास की मजबूत कड़ी बनेगा जेवर हवाई अड्डा • फाइल क्लस्टर और केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित 3,706 करोड़ रुपये का एचसीएल-फाक्सकान सेमीकंडक्टर संयुक्त उद्यम नोएडा से जेवर तक यमुना एक्सप्रेसवे के किनारे एक नए औद्योगिक हब की नर्स हैं। वाईआईडीए की एफडीआई और फार्च्यून-500 नीति के तहत अब तक आठ कंपनियों ने इस गलियारे में लगभग 12,000 करोड़ रुपये के निवेश की प्रतिबद्धता जताई है।

सेमीकंडक्टर संयंत्र का महत्व विशेष रूप से रेखांकित करने योग्य है। यहां बनने वाली चिप मोबाइल फोन, लैपटॉप और आटोमोबाइल को संचालित करेंगी, वही उत्पाद जो वैश्विक चीन-प्लस-वन आपूर्ति श्रृंखला पुनर्संरक्षण के केंद्र में हैं। नोएडा में सेमसंग का विश्वस्तरीय विनिर्माण केंद्र, हैवेल्स, अंबर एंटरप्राइजेज, माइक्रोसाफ्ट और एचसीएल-फाक्सकान की उपस्थिति से यह गलियारा उत्तर भारत में चीन-प्लस-वन रणनीति का प्राथमिक केंद्र बन चुका है। कार्गो हब का लक्ष्य है कि भारत को, विशेषकर उसके उत्तरी क्षेत्र को, वैश्विक लाजिस्टिक्स का प्रमुख प्रवेशद्वार और चीन-प्लस-वन रणनीति का विश्वसनीय विकल्प बनाया जाए। भारत के पहले एकीकृत एमआरओ केंद्र के रूप में भी जेवर

महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है। दशकों से भारतीय एयरलाइंस विमानों के रखरखाव के लिए सिंगापुर और दुबई पर निर्भर रही हैं। आने वाले समय में दुनिया भर के लोग इन सेवाओं के लिए जेवर आएंगे।

जेवर कृषि के लिए भी उतना ही क्रांतिकारी है। फल, सब्जियां, दुग्ध उत्पाद और सजावटी फूल अब सीधे अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचेंगे। इससे किसानों की आय में 20 से 30 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान है। राष्ट्रीय स्तर पर जेवर मेक इन इंडिया, उत्पादन-लिंकड प्रोत्साहन और राष्ट्रीय लाजिस्टिक्स नीति तीनों को एक साथ गति देता है। 50,000 प्रत्यक्ष और 50 लाख अप्रत्यक्ष रोजगार, फिल्म सिटी, खिलौना पार्क, मेडिकल डिवाइस पार्क और डाटा सेंटर का पूरा इकोसिस्टम आज उत्तर प्रदेश और एनसीआर को एक नई वैश्विक पहचान दे रहा है। जेवर हवाई अड्डा एक दिन में नहीं बना है, यह अथक भूमि अधिग्रहण, नीतिगत नवाचार, निवेशक कूटनीति और दूरदर्शी राजनीतिक साहस का सम्मिलित परिणाम है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 2017 में जब शासन की बागडोर संभाली थी तब उत्तर प्रदेश देश के तीन सबसे पिछड़े राज्यों में था। आज राज्य को 50 लाख करोड़ रुपये के संचयी निवेश प्रस्ताव मिले हैं। पूंजीगत व्यय वित्त वर्ष 2016-17 के 71,000 करोड़ रुपये से बढ़कर 2025-26 में देश में सर्वाधिक 1.77 लाख करोड़ रुपये हो गया है। जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश को एक ट्रिलियन (लाख करोड़) डालर की अर्थव्यवस्था बनाने की महत्वाकांक्षा की घोषणा की थी, तब उन्होंने कहा था कि 'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत को पांच लाख करोड़ डालर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा है। उत्तर प्रदेश भी एक लाख करोड़ डालर की अर्थव्यवस्था बनने का संकल्प लेता है।' यह केवल एक आर्थिक लक्ष्य नहीं, एक सभ्यतागत संकल्प है। जेवर उस संकल्प की उड़ान पट्टी है। और इतिहास साक्षी है कि-जब उड़ान पट्टी तैयार होती है, तो स्वप्न भी उड़ान भरते हैं।

(लेखक जेएनयू में एसोसिएट प्रोफेसर हैं)

response@jagran.com